डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - IV

Date:- 04-02-2023

अजातशत्रु का संवाद-योजना

संवाद नाटक का आवश्यक तत्व है। पात्रों का चारित्रिक विशेषताओं और विविध घटनाओं का बोध संवादों के माध्यम से होता है। संवाद, सरस, संक्षिप्त, रोचक और कौतुहलवर्धक होने चाहिए। इस दृष्टि से प्रसाद जी का 'अजातशत्रु' नाटक पूर्णरूपेन सफल रहा है। इस नाटक के संवाद सरस, प्रवाहपूर्ण और प्रभावोत्पादक है। संवादों में काव्यात्मकता और दार्शनिकता का गुण विद्यमान है। यथा -

बिंबसार: "आह, जीवन की क्षणभंगुरता को देखकर भी मानव कितनी गहरी नींव देना चाहता है।"

प्रत्येक नाटक की सफलता के लिए इस बात पर बल दिया जाता है कि पात्रों के संवाद छोटे-छोटे तथा पात्रों की मनःस्थिति के अनुकूल होने चाहिए। प्रस्तुत नाटक के संवाद-योजना में ये गुण सर्वत्र विद्यमान हैं, यथा -

मागंधी : (दासी से) - आर्यपुत्र की हस्तिस्कंध-वीणा ले आओ।
उदयन : तब तक तुम्हीं कुछ सुनाओ।
मागंधी : मैं दासी हूँ प्रियतम।
उदयन : नहीं, तुम आज से मेरी स्वामिनी बनो।

इस नाटक में कथोपकथन चार प्रकार देखने को मिलता है—

(1) पात्र का स्वयं का चरित्र प्रकट करने वाला।
(2) साधारण कथा-प्रसंग चलाने वाले।
(3) नाटककार के मन्तव्य को प्रकट करने वाले।

संवादों का मुख्य प्रयोजन कथानक को अग्रसर करना है एवं चरित्र-चित्रण में पूरा योग देना है। प्रसाद के नाट्य संवादों में दोनों प्रयोजन सर्वत्र सिद्ध होते हैं।